दैनिक जागरण इटावा 24/11/2026

पराली जलाने से घटती है मिट्टी की उर्वरा शक्ति

जागरण संवाददाता, इटावा : कृषि विज्ञान केंद्र में इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत चल रहे पांच दिवसीय किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम का सोमवार को समापन हुआ। मुख्य अतिथि चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के निदेशक प्रसार प्रो. विवेक कुमार त्रिपाठी ने केंद्र की वर्मी कंपोस्ट, नाडेप कंपोस्ट, क्राप कैफेटेरिया, मौसम वेधशाला, मदर आर्चर्ड और मछली प्रोटोटाइप तालाब इकाइयों का निरीक्षण किया।



कृषि विज्ञान केंद्र में संबोधित करते निदेशक प्रसार प्रो. विवेक त्रिपाठी • जागरण

उन्होंने विज्ञानियों को इकाइयों का बेहतर प्रबंधन करने और उन्हें साफ-सुथरा रखने के निर्देश दिए। साथ ही आय-व्यय का विवरण पट्टिका पर प्रदर्शित करने को कहा। किन्नो बाग में उर्वरकों और वर्मी कंपोस्ट का उचित प्रयोग करने तथा ड्रिप सिंचाई व्यवस्था दुरुस्त रखने पर भी जोर दिया गया। प्रशिक्षण में महेवा और बसरेहर विकास खंड के किसानों ने फसल अवशेष न जलाने की शपथ ली।

प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि फसल अवशेष जलाने से वायुमंडल में जहरीली गैसें फैलती हैं और मिट्टी की उर्वरा शक्ति घटती है। जैविक पदार्थ कम होने से मिट्टी की जलधारण क्षमता घटती है और उर्वरकों की कमी होती है। उन्होंने किसानों को प्राकृतिक एवं गो आधारित खेती अपनाने की सलाह दी। उनके अनुसार, एक देसी गाय से एक एकड़ भूमि की खेती के लिए जरूरी जैविक संसाधन तैयार किए जा सकते हैं। जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत, दशपर्णी अर्क और पंचगव्य के उपयोग से औद्यानिक समेत अन्य फसलों की अच्छी उपज ली जा सकती है। उन्होंने केंद्र पर चल रही प्राकृतिक खेती, फसल अवशेष प्रबंधन, एफओएम, सीएफएलडी दलहन एवं तिलहन परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। प्रक्षेत्र में अरहर, सरसों और गेहूं के बीज उत्पादन के साथ आलू की जानकारी भी ली।

केंद्र प्रभारी डा. एमके सिंह ने बताया कि भरथना, ताखा और जसवंतनगर विकास खंडों के 25-25 किसानों के पांच दिवसीय प्रशिक्षण पूरे हो चुके हैं। एक प्रशिक्षण और होना है। उनके अनुसार, प्रशिक्षण से जिले में फसल अवशेष जलाने की घटनाओं में कमी देखी जा रही है। सीआरएम नोडल विज्ञानी डा. विजय बहादुर जायसवाल ने हैप्पी सीडर, सुपर सीडर और स्मार्ट सीडर से फसल अवशेष प्रबंधन तथा डीकंपोजर से अवशेष को खेत में सड़ाकर जैविक खाद बनाने की जानकारी दी। इस दौरान डा. पुष्पा देवी, डा. कमल कांत, सुनीता मिश्रा, राम प्रसाद, प्रवीन कुमार, रामवीर सिंह और प्रमोद कुमार मौजूद रहे।

harti Digital Lokbhartipage lokbhartiDigit-1 Lokbhartidigi

लोक भारती

कानपुर | मंगलवार | 24 नवम्बर, 2026

कानपुर-लखनऊ से एक साथ प्रकाशित

पराली प्रबंधन को लेकर पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का समापन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र इटावा में इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत आयोजित पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का समापन हुआ। मुख्य अतिथि निदेशक प्रसार प्रो. विवेक कुमार त्रिपाठी ने केंद्र की विभिन्न इकाइयों का निरीक्षण कर उनके बेहतर प्रबंधन के निर्देश दिए। उन्होंने वैज्ञानिकों से इकाइयों को स्वच्छ रखने और आय-व्यय का विवरण प्रदर्शित करने को कहा। प्रशिक्षण में महेवा और बसरेहर विकासखंड के किसानों को पराली न जलाने की शपथ दिलाई गई। उन्हें बताया गया कि पराली जलाने से वायु प्रदूषण बढ़ने के साथ मिट्टी की उर्वरा शक्ति,



जैविक पदार्थ और संरचना प्रभावित होती है। किसानों को प्राकृतिक और गो आधारित खेती अपनाने की सलाह देते हुए जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत, दशपर्णी अर्क और पंचगव्य के उपयोग की जानकारी दी गई। मुख्य अतिथि ने केंद्र पर संचालित प्राकृतिक खेती, फसल अवशेष प्रबंधन, दलहन एवं तिलहन की परियोजनाओं की समीक्षा भी की। केंद्र प्रभारी डॉ. एमके सिंह ने बताया कि भर्थना, ताखा और जसवंतनगर के किसानों के लिए भी पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं। सीआरएम वैज्ञानिक डॉ. वीबी जायसवाल ने हैप्पी सीडर, सुपर सीडर और स्मार्ट सीडर से पराली प्रबंधन तथा डीकम्पोजर के उपयोग की जानकारी दी। कार्यक्रम में डॉ. पुष्पा देवी, डॉ. कमल कांत, सुनीता मिश्रा, राम प्रसाद, प्रवीण कुमार, रामवीर सिंह और प्रमोद कुमार मौजूद रहे।

फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का हुआ समापन

संवाददाता ■ दीक्षालय प्रवाह



कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र इटावा में कृषक प्रशिक्षण का इन–सीटू फसल अवषेश प्रबन्धन परियोजना अन्तर्गत प्रषिक्षण कार्यक्रम के समापन के मुख्य अतिथि (डा0) प्रो0 विवेक कुमार त्रिपाठी, निदेशक प्रसार द्वारा सम्पन्न किया गया। मुख्य अतिथि ने कृषि विज्ञान केन्द्र पर स्थापित विभिन्न इकाईयों–वर्मी कम्पोश्ट, नाडेप कम्पोश्ट, क्राप कैफेटेरिया, मौसम वेधशाला, मदर आर्चड़ तथा मछली प्रोटोटाइप तालाब का निरीक्षण किया तथा सम्बन्धित वैज्ञानिकों को इसके उत्तम प्रबन्धन हेतु निर्देष दिया और कहा कि सभी वैज्ञानिक अपने से सम्बन्धित समस्त यूनिटों को साफ–सुथरा एवं स्वच्छ के साथ–साथ आय–व्यय का पट्टिका लगायें। किन्नो बाग में उर्वरकों, वर्मी कम्पोस्ट के प्रयोग तथा ड्रिप सिंचाई की व्यवस्था की जाय। प्रषिक्षण कार्यक्रम में जनपद–इटावा के विकास खण्ड–महेवा एवं बसरेहर के प्रषिक्षणार्थियों को पराली न जलाने के बारे में षपथ लिया तथा होने वाली हानियों जैसे वायुमण्डल में जहरीली गैसों का उत्सर्जन एवं मिट्टी की उर्वरा षक्ति, जीवान्स पदार्थ, मृदा संरचना के साथ–साथ जीवित मृदा में उपस्थित लाभदायक कीटों, उत्प्रेरक, तत्वों का ह्रास होता है। मृदा में जीवान्स पदार्थ की कमी से उर्वरकों की उपलब्धता, जल धारण क्षमता में कमी आती है। कृशक भाईयों को प्राकृतिक खेती या गौआधारित खेती करने की सलाह दी तथा बताया कि एक देसी गाय के पालने से एक एकड़ की खेती सुचारू रूप से की जा सकती है तथा देसी गाय के पालने से अन्ना जानवरों की वृद्धि को रोकी जा सकती है। जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत, दषपर्णी अर्क तथा पंचगव्य का प्रयोग कर औद्यानिक के साथ–साथ अन्य फसलों का भी भरपूर उपज लिया जा सकता है तथा उक्त खेती करने से कृशि लागत को निम्न स्तर तक किया जा सकता है। कृषक भाईयों को जनपद के अनुसार अच्छी प्रजातियों के फलदार पौधों के रोपण की सलाह दी। निदेशक प्रसार द्वारा केन्द्र पर चल रही परियोजनाओं–प्राकृतिक खेती, फसल अवषेश प्रबन्धन, एफ0ओ0एम0, सी0एफ0एल0डी0 दलहन एवं तिलहन तथा स्वच्छता के प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने समस्त वैज्ञानिकों को निर्देषित किया गया कि कृशकों के हित के लिए चलाई जा रही समस्त कार्यक्रम–प्रषिक्षण, प्रदर्षन, ट्रायल को समय से सम्पन्न कराया जाय तथा केन्द्र को प्रत्येक समय साफ–सुथरा एवं स्वच्छ रखा जाय। केन्द्र के प्रक्षेत्र पर बोई गयी बीज उत्पादन फसल–अरहर, सरसों, गेहूँ तथा उत्कृष्टता केन्द्र के लिए आलू, के प्रगति के बारे में जानकारी प्राप्त की। प्रषिक्षण के समापन अवसर पर केन्द्र के प्रभारी, डा0 एम0के0 सिंह द्वारा निदेषक महोदय को सम्मानित किया गया। केन्द्र के प्रभारी द्वारा यह बताया गया कि फसल अवषेश प्रबन्धन के पॉच दिवसीय 3 प्रषिक्षण विकास खण्ड–भर्थना, ताखा तथा जसवन्तनगर के कृषकों का प्रशिक्षण सम्पन्न कराया जा चुका है जिससे प्रशिक्षित कृषक अपने साथ–साथ आस पडोस के किसानों को भी जागरूककर फसल अवषेश को न जलाने की सलाह दे रहे हैं जिससे जनपद में फसल अवषेश जलाने की घटनाओं में कमी देखी जा रही है। केन्द्र के सस्यध्नोडल सीआरएम वैज्ञानिक डा0 वी0बी0 जायसवाल ने कृशकों को सीआरएम की मषीनों जैसे–हैप्पी सीडर, सुपर सीडर तथा स्मार्टसीडर का प्रयोग कर पराली का प्रबन्धन करें तथा डीकम्पोजर का प्रयोग कर पराली को खेत में ही सड़ाकर खाद बनायें। गृह वैज्ञानिक डा0 पुश्पा देवी, कृषि अभियंत्रण डा0 कमल कान्त, श्रीमती सुनीता मिश्रा, राम प्रसाद, प्रवीन कुमार, रामवीर सिंह एवं प्रमोद कुमार उपस्थित थे।